

Report on
05 Days Workshop
on
Project Management & Finance Management
For
SCERT-DIET Uttarakhand

Duration: 08th – 12th January 2024

Venue: Indian Institute of Management, Vihar Lake, MUMBAI

***Course Coordinators: Prof. V. B. Khanapuri, Prof. M. Venkateshwarlu,
Prof. Utpal Chattopadhyay***

**Report Presented By: Kailash Prakash Chandola, Lecturer P&M
DIET Bageshwar.**



Indian Institute of Management, Vihar Lake, MUMBAI – 400 087.

and

SCERT Uttarakhand, Dehradun- 248 008.

प्रथम दिवस 08 जनवरी, 2024 :

Project Management & Finance Management से संबंधित एस0सी0ई0आर0टी0 उत्तराखण्ड तथा उत्तराखण्ड की डायट्स के अधिकारियों तथा संकाय सदस्यों के लिए आयोजित 05 दिवसीय क्षमता संबर्द्धन कार्यशाला का आरंभ दिनांक 08 जनवरी, 2024 को मुम्बई में स्थित देश के 21 वें भारतीय प्रबंधन संस्थान में हुआ। कार्यशाला में निदेशक, अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण द्वारा स्वयं भी प्रतिभाग किया गया।



कार्यशाला के प्रथम दिवस पर समस्त प्रतिभागियों को भारतीय प्रबंधन संस्थान, मुम्बई के आधुनिक तकनीक से सुसज्जित प्रशिक्षण कक्ष में सत्रों के आयोजन हेतु आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम प्रो० उत्पल चटोपाध्याय द्वारा संस्थान की ऐतिहासिक विकास यात्रा के विभिन्न पड़ावों से प्रतिभागियों को परिचित कराया गया, उनके द्वारा बताया गया कि संस्थान का उद्भव सन् 1963 ई० में प्रशिक्षण संस्थान NITIE के रूप में हुआ जो अपने यौवन को प्राप्त कर IIM के रूप में 16 अगस्त 2022 को स्थापित हुआ।

प्रथम सत्र **Strategic Management and Decision Making** को संचालित करते हुए

प्रो० चटोपाध्याय द्वारा सर्वप्रथम उपर्युक्त विषय की परिभाषा, उदगम एवं तत्पश्चात् 1971 भारत पाकिस्तान युद्ध को संदर्भित करते हुए **Strategic Management and decision Making** की महत्ता को स्थापित किया।



इसके उपरांत लक्ष्यों के निर्धारण के द्वारा रणनीति निर्माण पर चर्चा हुई तथा रणनीति के **Micro, Macro** तथा **International** संदर्भ पर विस्तार से बात हुई साथ ही रणनीति को प्रभावित करने वाले कारकों जैसे— मानवीय संसाधन, वित्तीय संसाधन, तकनीकी संसाधन, भौतिक संसाधन आदि को उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया।

रणनीति प्रबंधन की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए इसके चरणों **Environmental Scanning, Strategy Formulation, Strategy Implementation, Evaluation & Control** पर प्रकाश डाला गया, जिसके अंतर्गत **PESTET, SWOT, Motivation, Monitoring, test s strategy for consistency** आदि पर व्यापक चर्चा हुई। रणनीति निर्माण के अन्य पहलुओं पर प्रतिभागियों की समझ को व्यापकता प्रदान करते हुए प्रो चटोपाध्याय द्वारा कहा गया कि **Strategy cannot be made in a vacuum or in a isolation, it needs a Network.**

इसके पश्चात् **Business Strategy Network** को प्रभावी बनाने के लिए **Marketing, Manufacturing, R&D, Finance** आदि बिंदुओं पर चर्चा करते हुए इसको शैक्षिक परिदृश्य से जोड़ा गया। प्रो० चटोपाध्याय के सत्र संचालन से न सिर्फ नवीन सूचनाएं व तकनीक का ज्ञान हुआ अपितु सुगमकर्ता के रूप में उनकी अपनी विशिष्ट शैली ने सभी प्रतिभागियों को प्रभावित किया इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भोजनावकाश की घोषणा के उपरांत भी प्रतिभागी प्रशिक्षण कक्ष में बने थे और प्रो० चटोपाध्याय के साथ ही कक्ष से भोजनालय की ओर प्रस्थान किया।

भोजनावकाश के उपरांत शोध कार्य में ख्याति प्राप्त, सरल व्यक्तित्व के धनी संस्थान के निदेशक, प्रो० मनोज कुमार तिवारी को अपने मध्य पाकर समस्त प्रतिभागी अभिभूत थे। अपने सत्र में प्रो० तिवारी द्वारा **Building an Institute of Excellence** विषय पर अपने अनुभव के खजाने से बहुमूल्य मोती प्रतिभागियों के साथ साझा किए। जिसमें उनके द्वारा कैंब्रिज मॉडल, हावर्ड मॉडल, एम०आई०टी० मॉडल के माध्यम से आर्थिक संसाधनों के प्रबंधन को साझा करते हुए किसी भी संस्थान को उत्कृष्टता प्रदान करने के बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत किए।



प्रथम दिवस के अंतिम सत्र में कार्यक्रम समन्वयक, प्रो० वी० बी० खानापूरी एवं सह समन्वयक प्रो० उत्पल चटोपाध्याय ने संयुक्त रूप सत्र का संचालन किया। जिसमें एक गतिविधि के माध्यम से उत्तराखण्ड में स्थित 13 डायट्स के प्रदर्शन के आधार पर बेहतर 05 का चयन प्रत्येक प्रतिभागी को करने को कहा गया तत्पश्चात **Statically normalisation the data** विधि को अपनाकर प्रो० खानापूरी द्वारा राज्य की समस्त डायट को प्रदर्शन के आधार पर दी गई रैंकिंग को साझा किया तथा यह स्थापित करने का प्रयास किया कि वे कौन कौन से कारक है, जो किसी संस्थान को उत्कृष्ट बनाते हैं तथा जिनको अपनाकर शेष संस्थान भी



उत्कृष्टता को प्राप्त कर सकते हैं। प्रो० खानापुरी ने Knowledge Creation, Knowledge Assimilation and Knowledge Dissemination को स्पष्ट करते हुए शिक्षक के मूलभूत गुणों पर व्यापक चर्चा की। इसके उपरांत समस्त प्रतिभागियों को समूह में विभक्त कर सभी को डायट के लिए विज्ञान स्टेटमेंट लिखने के लिए कहा गया। सभी समूहों से उक्त स्टेटमेंट प्राप्त कर प्रो० चटोपाध्याय द्वारा एक-एक को बड़े समूह के साथ साझा किया इसके उपरांत कल इन सब विज्ञान स्टेटमेंट के माध्यम राज्य की समस्त डायट्स के लिए एक समान विज्ञान निर्माण का कार्य सौंपकर प्रो० चटोपाध्याय द्वारा सत्र को विराम दिया गया।

द्वितीय दिवस 09 जनवरी, 2024 :

द्वितीय दिवस का प्रारम्भ कार्यक्रम समन्वयक Prof. V. B. Khanapuri जी के द्वारा SCERT उत्तराखण्ड का विजन स्टेटमेंट स्क्रीन पर दिखा कर किया गया।

“A Government body Responsible for various Educational, Training and Research activities with in the State.”

प्रतिभागियों के साथ Education and Training पर चर्चा परिचर्चा की गयी

Education Mean Why ?

Educate not for what? for why also.....teach him to catch a fish not only to eat fish.

Education plays a pivotal role in all of our lives and paves the way for all of us to reach our highest potential. When we talk about the importance of education in life, it is extremely important to understand what is education.

- Mentioned below are the reasons why education is important for our country, as well as any country in the world.
- Citizens of a country understand their true potential through the means of education.
- Education helps in getting an individual a good-paying job, which helps in improving the economic status of his/ her family.
- It teaches an individual the importance of differentiating between good and bad as well as right and wrong.
- An educated person can strive for the betterment of a country.
- More educated individuals help in creating more jobs for everyone. This in turn helps in solving the problem of unemployment in the country.

Training- How and What are Training:

Decide on training methods and develop a detailed plan: A thorough training plan consists of learning methods, content matter, learning flow, and other essential aspects. Here are a few methods of training that you can choose from:

- **Classroom training:** This can encourage employee growth and lead to healthy relationships that enable new employees to feel supported and

welcome. Classroom training can also include coaching, teaching, and mentoring to focus on sharing knowledge.

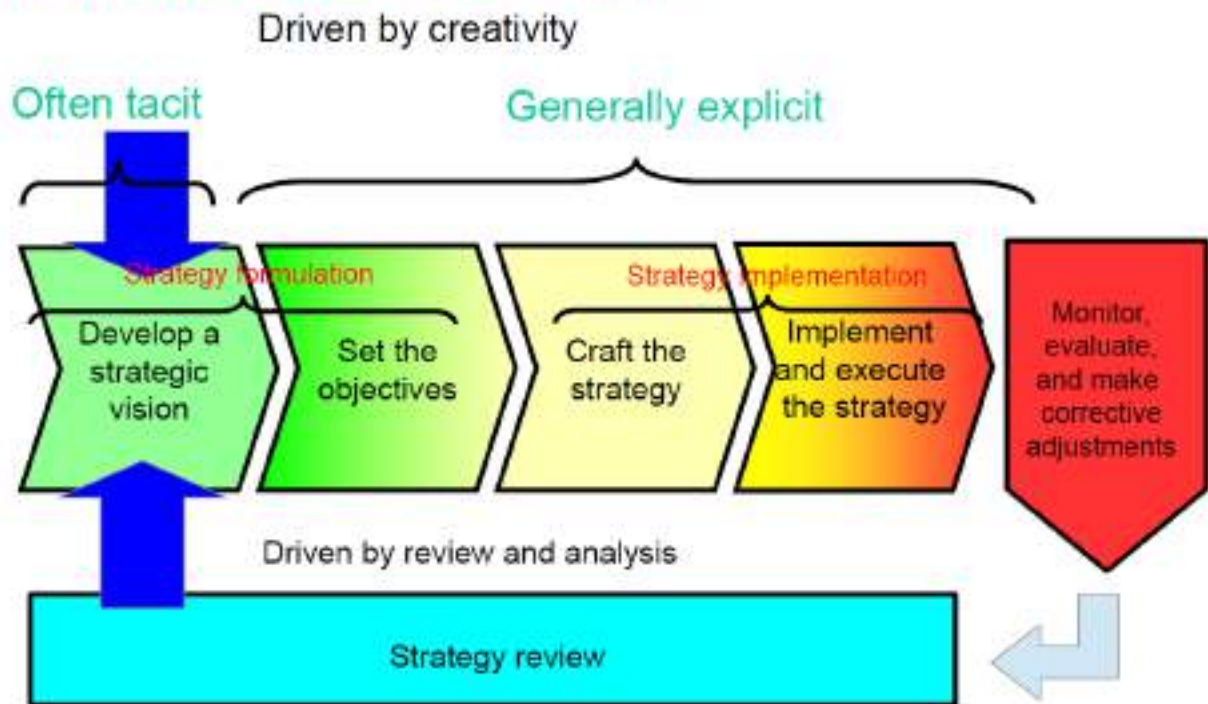
- **Computerised training:** This offers flexibility and scalability, as any number of participants can join the program and progress at their own pace. This type of training involves implementing virtual classroom features such as screen-sharing, audio-visual tools and video recording.
- **Simulation-based training:** In this type of training method, employees deal with real-time hypothetical situations and are required to solve them. This training method is often suitable for those who handle heavy and expensive machinery.
- **On-the-job or hands-on training:** This allows employees to understand the working environment and acquire new competencies. The training also helps you use special equipment in a live-work practise or training environment.
- **Role-playing:** The process consists of the trainee and trainer, where the trainees act as if they are dealing with a problem and are responsible for solving it without guidance. Participants are required to act fast and realistically in various dynamic situations.
- **Case study:** In this method, a participant gets a real or imaginary scenario that depicts everyday work situations. They then receive basic instructions to analyse the case and come up with the best possible solution to help improve their problem-solving skills.
- **Training videos:** Many people prefer watching a video over reading, so videos can help them learn important information more quickly. This can help make the training process interactive, demonstrative and more engaging.

प्रोफेसर खानापुरी जी के द्वारा उत्तराखंड में जनपद विकासखंड छात्र संख्या पर अध्यापकों की अनुमानित संख्या एवं अध्यापक प्रशिक्षण के लिए डाइट स्तर पर तीन स्तर के मॉड्यूल बनाने की बात की गई । प्रशिक्षण में तकनीकी का भी समावेश करने की बात हुई। प्रशिक्षण

में Learning Log तैयार कर प्रशिक्षण के Impact को Ground तक पहुँच पर चर्चा की गयी। इसके बाद खानापूरी सर के द्वारा निम्न बिंदुओं पर जानकारी प्रदान की गई।

Strategic Planning

The process of strategic management



There is no longer any debate regarding the fate of any attempt to make improvements in education: its success or failure will be decided within the institution itself and the teaching therein, and this, in turn, depends on the quality of pedagogical leadership and the performance of those in leadership roles. The Head of the institution and its senior management team are regarded as having an increasingly important role to play in the management of that institution and its results. Responding to the current need for effective management demands of these professionals that they commit to broadening their competences in order to devise new interventions and innovations in the pursuit of greater educational quality. The core competences in the professionalization of education management are:

- The ability to relate well to others and to foster effective co-working in the educational setting, based on building cooperative, productive relationships that support the improvement of educational services. Competencies geared towards achieving high-quality results, such as continuing development for teaching staff. This ensures that the capacity of the institution in matters of curricular management and pedagogy is adequately developed.
- Institutional and strategic competencies that enable leadership capacity to be developed. This, in turn, generates a strategic vision of the educational institution, and ensures that new projects are effectively launched and managed.

Educational institutions need management systems in place that are capable of controlling the outcomes of their strategies effectively and efficiently.

To fulfill the organizational mission, the current educational management model in many countries needs to undergo a series of changes, to reflect more closely the competencies and characteristics outlined above.

A new management model is required, based on: significant decision-making capacity; leadership that is not solely focused on one single leader but rather is shared across the organisation; teamwork; and strategic planning all driving forward the innovation agenda in education. If this transformation could be brought about, it would enable in the medium-term improvements to be made in the quality of education and would bring different institutions into line with each other in terms of quality and competency.

The analysis of the industry: the 5 forces framework

Michael Porter's (1980) theoretical framework for industry analysis



Porter's Five Forces Model is an important tool for understanding the main competitive forces at work in an industry. This can help you to assess the attractiveness of an industry, and pinpoint areas where you can adjust your strategy to improve profitability.

According to Porter, the five main forces that can impact the competitiveness of an industry are:

Competitive Rivalry: the strength of competition in the industry.

Supplier Power: the ability of suppliers to drive up the prices of your inputs and raw materials.

Buyer Power: the strength of your customers to drive down your prices.

Threat of Substitution: the extent to which different products and services can be used in place of your own.

Threat of New Entry: the ease with which new competitors can enter the market (and potentially drive down your prices).

By thinking about how each force affects your organization, and by identifying

its strength and direction, you can quickly assess your competitive position. You can then look at what strategic changes you need to make to deliver long-term profit.

Generic strategies



Project Planning:

Project management in schools and institutions is the process of ensuring that all educational project requirements are met. This includes confirming that the project is completed on time, within budget, and to the required standard.

An essential part of project management in education is creating a clear plan and a working timeline. It also involves coordinating and communicating with all stakeholders, including other teachers and administrators or students and their parents.

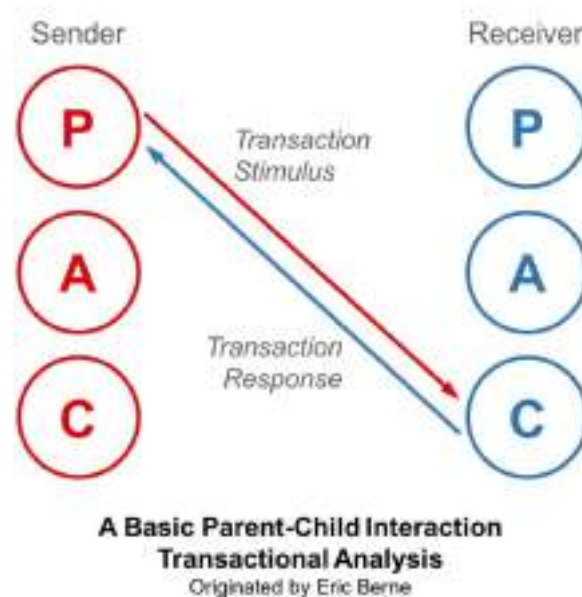
In other words, to be successful, project managers in education must have excellent organizational and communication skills. They must also be able to work effectively under pressure and juggle multiple tasks simultaneously.

Transactional Analysis

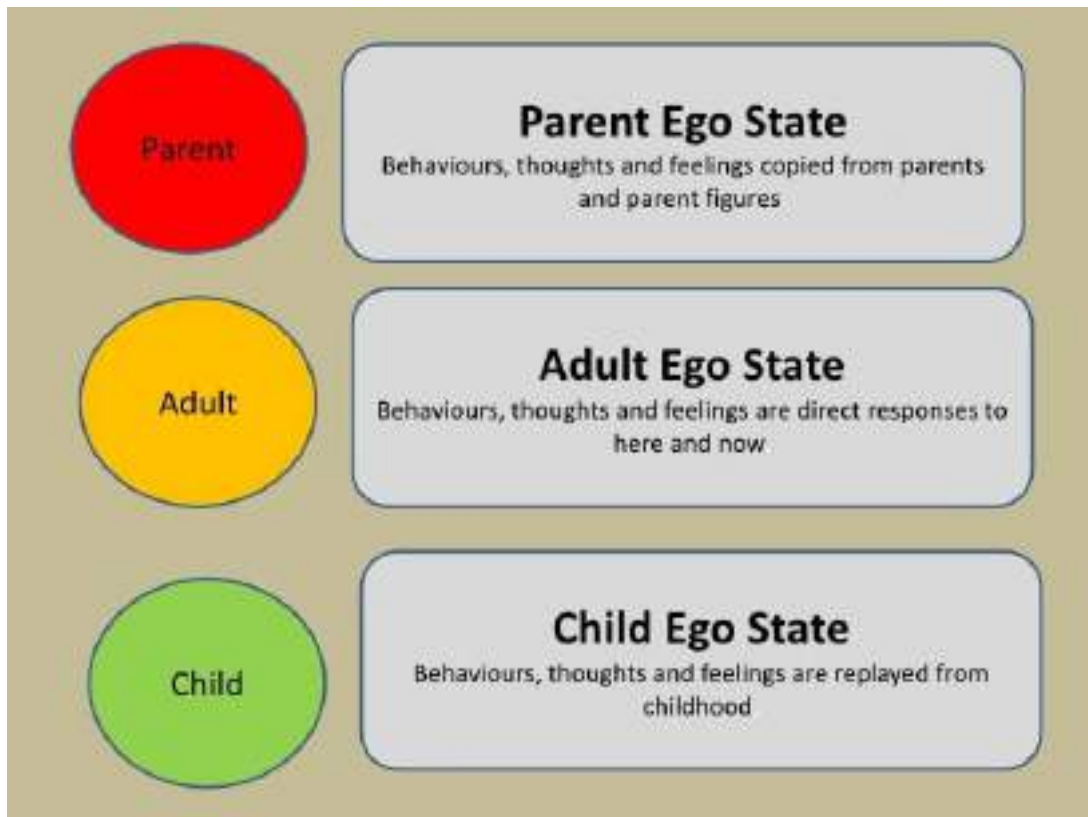
During a conversation with someone, the person starting the communication will give the ‘transaction stimulus,’ and then the person receiving this stimulus (or message of communication) will give the ‘transaction response.’

Transactional analysis is the method used to analyze this process of transactions in communication with others. It requires us to be aware of how we feel, think, and behave during interactions with others.

TA recognized that the human personality is made up of three “ego states,”; each of which is an entire system of thought, feeling, and behavior from which we interact with each other. The Parent, Adult, and Child ego states and the interaction between them form the foundation of transactional analysis theory.

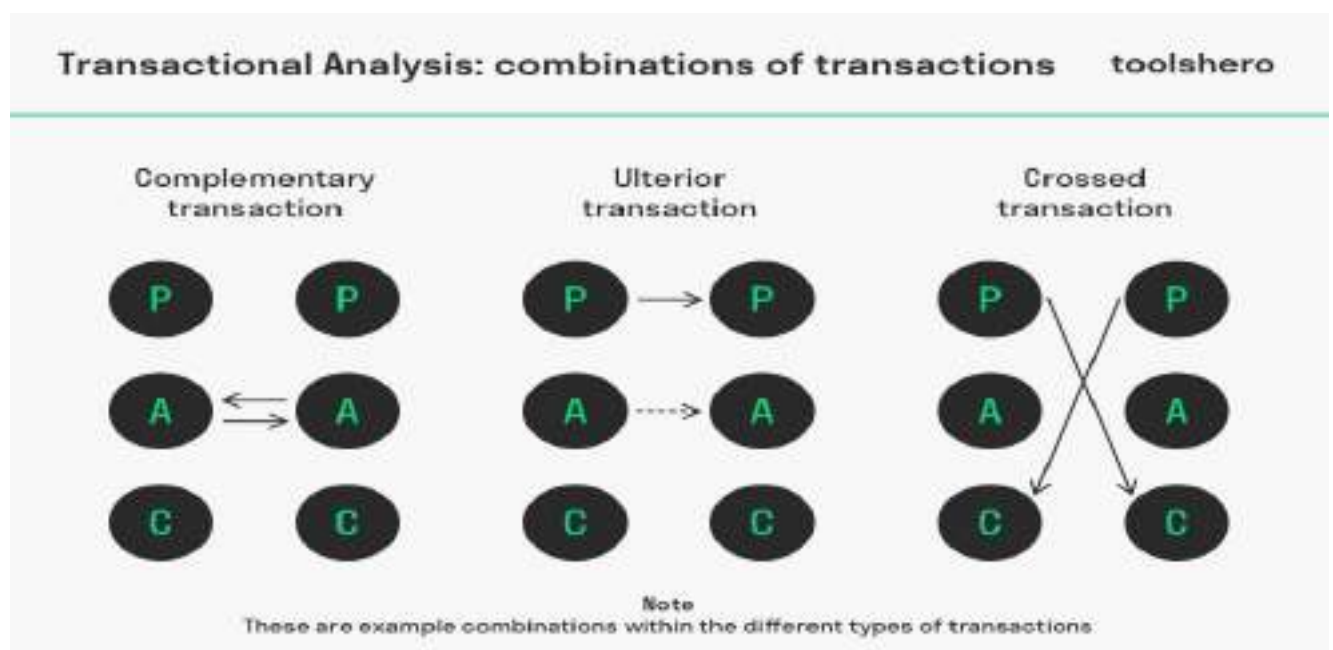


TA believes that we have three different states or ways of being during interactions, which are; the child ego state, the parent ego state, and the state of adult (Berne, 1957).



The three states of child, parent, and adult affect how we receive, perceive, and respond to information or communication from someone.

Berne observed that people need strokes, the units of interpersonal recognition, to survive and thrive. Understanding how people give and receive positive and negative strokes and changing unhealthy patterns of stroking are powerful aspects of work in transactional analysis.



The attention span of children: Prepare material and activities in such a way that students are engaged in the classroom and beyond class to acquire knowledge skills and attitude.

A RACI matrix is a chart that defines and documents ownership and responsibility for each stage of a project.

RACI stands for Responsible, Accountable, Consulted/ Support, and Informed.

A RACI matrix can be used for many project management tasks, including:

- Clarifying team member roles and tasks
- Eliminating confusion and stalled processes
- Ensuring that every relationship is managed appropriately
- Assigning tasks, activities, responsibilities, accountability, decision-making, and support to a team
- Preventing over-allocation of resources
- Ensuring no task is overlooked
- Providing a fast and efficient way to re-allocate resources

A project manager creates a RACI matrix at the start of the project. Tips for implementing a RACI matrix:

- Encourage teamwork and foster collaboration
- Make changes and adjustments as needed
- Get everyone prepared
- Consider changes and update accordingly
- Stay in touch

Project Planning Phases:

Project phases are smaller portions of a project that represent distinct goals or milestones in the larger project lifecycle. Within the project lifecycle, there are 5 project phases:

1. Project Initiation
2. Project Planning
3. Project Execution
4. Project Monitoring and Control
5. Project Closure

Each phase comes with specific requirements of the project team, as well as key deliverables and action items that keep the project moving forward successfully. Mastering project phases is essential for keeping the project on track while completing essential tasks and checkpoints throughout the process.



Project overview.

- High Level Summary -
- Set the overall scope.
- Clearly Communicate.
- Critical to get this right.

Goals vs. Objectives

While goals and objectives work in harmony to maximise strategy and produce results, they have clear differences that must be recognized to use them effectively.

Goals are:

- Broad in nature
- Valuable for setting a general direction or vision
- Difficult to measure
- Abstract ideas
- Longer term
- The end result

Objectives are:

- Narrow in scope
- Specific steps
- Associated with a schedule and time frame
- The means to the end result
- Easy to measure
- Short-term or medium term

The SMART acronym has been tweaked over time and continues to vary depending on the person or business using it. At present, the SMART acronym refers to the following:

- **Specific** refers to being as specific as possible with the desired goal. Generally, the narrower and more specific a goal is, the clearer the steps to achieving it will be.
- **Measurable** refers to ensuring there will be evidence that can be tracked to monitor progress.
- **Achievable** refers to ensuring the set goal is realistic and possible to complete or maintain within the set time frame.
- **Relevant** refers to making sure the goal itself aligns with values and long-term goals and objectives.
- **Time-bound** refers to making sure the goal is set within an appropriate time frame.

III Session

How do Activity Plans provide structure for scheduling?

Activity Plans (AP) represent a series of activities grouped by a common timeline objective. This results in the ability to manage a group of interconnected activities that move forward independently of (and/or in unison with) each other.

How do Activity Plans provide scheduling automation?

There are many productivity enhancements provided by AP. The single most important being the ability to control multiple activities as a single entity. AP can be assigned to a matter automatically, via the visual process builder or flow or through other means, such as a logic trigger. To this end, features such as Activity Plan Templates (APT) allow the reuse of previously created AP without the need to recreate the same process.

What is an Activity Plan Template?

APT expedites the process of creating a new AP. The templates are pre-configured AP containing all the details required to implement an AP. Simply apply a template to a matter and a new AP is deployed with everything scheduled and assigned as per the template. The matter's new AP may be left as-is or edited to reflect a unique schedule for the given AP.

Problem Statement:

In developing your problem statement, there are some things to keep in mind:

- The problem to be addressed should have a clear relationship to your organization's mission, purpose, and long-term goals.
- Include accompanying information such as statistical facts, testimonials, interviews, and survey results provide additional support for your efforts to address the problem.
- The problem you identify should be within your organization's capacity to address using available resources.
- Be sure to include documentation of community involvement.
- Think about what the long-term impact will be of addressing the problem.

Additional tips for writing a problem statement:

- Accompanying information should be well-documented and should not include assumptions.
- Focus your explanation of need on the geographic area your organization serves.
- Give a clear sense of the urgency of your request.
- Always provide a baseline population number if you reference percentages in the problem statement

Forward and Backward scheduling:

There are two proven strategies to be on time whether you schedule appointments or deliveries: forward and backward scheduling.

What is forward scheduling?

Forward scheduling allows businesses to plan and make deliveries at the earliest time by allocating tasks when the required resources are available, and completing them as quickly as possible.

While scheduling tasks forward, you line them according to the start date and then let it flow for the subsequent days. Overall, it's a process that prioritizes making deliveries quicker and convenient.

What is backward scheduling?

Backward scheduling is another planning strategy where orders are scheduled based on customer-preferred delivery dates and times. This strategy is also called Just-In-Time (JIT) manufacturing. When your customer places an order with a specific deadline, your team should ensure that it is fulfilled to meet that deadline by planning backwards from the delivery date.

If you Plan the work, You plan for success.

IV Session : Risk Managements in Projects.

Prof Ruchita Gupta

प्रो० रुचिता गुप्ता द्वारा प्रोजेक्ट में रिस्क को कैसे मैनेज करे इस पर विस्तार से चर्चा की गयी इसमें उनके द्वारा अपने एक International Seminar का उदाहरण भी दिया गया। सेमिनार का कैसे आयोजन किया जाता है इसके बारे भी विस्तार से बताया गया जिसके मुख्य विन्दु निम्नवत है।

Vanue

Delegates

Lodging

Boarding

Food

Etc.

Web Page Designing

Content Development

How you Compete

- Competing through efficiency.
- Competing through innovation.
- Reducing uncertainty
- Through IPR (Individual Property Rights)

Project risk management:

Project risk management is the process of identifying, analyzing and responding to any risk that arises over the life cycle of a project to help the project remain on track and meet its goal. Risk management isn't reactive only; it should be part of the planning process to figure out the risk that might happen in the project and how to control that risk if it in fact occurs.

A risk is anything that could potentially impact your project's timeline, performance or budget. Risks are potentialities, and in a project management context, if they become realities, they then become classified as "issues" that must be addressed with a risk response plan. So risk management, then, is the process of identifying, categorizing, prioritizing and planning for risks before they become issues.

Risk management can mean different things on different types of projects. On large-scale projects, risk management strategies might include extensive detailed planning for each risk to ensure mitigation strategies are in place if project issues arise. For smaller projects, risk management might mean a simple, prioritized list of high, medium and low- priority risks.

Use a project priority matrix when you need to decide:

- Which feature your team should start next.
- How to delegate tasks.
- A priority order for bug/issue fixes.
- Which area of a large project requires the most attention.
- How to structure your day.

Time/Performance/Cost Project Priority Matrix

A super simple version of a priority matrix maps three basic, competing priorities in any project:

- **Time:** how long the project will run.
- **Performance** (or scope): how many features, or the level of quality, the project needs.
- **Cost:** how much the project will cost the company; or how much the end product will cost the consumer.

	Time	Performance	Cost
Constrain	X		
Enhance		X	
Accept			X

This matrix maps time, performance, and cost against three actions:

- **Constrain:** Actively work to decrease this factor.
- **Accept:** Let this factor be as large as necessary.
- **Enhance:** Actively work to increase this factor.

तृतीय दिवस 10 जनवरी, 2024 :

प्रथम सत्र में Prof. M.Venkateshwarlu द्वारा Financial Management पर विस्तृत चर्चा की गई। जिसके मुख्य बिंदु निम्न हैं:

Annual Plan and Budget बनाने के लिए किन-किन बिंदुओं पर फोकस किया जाना है— इसको Excel Sheet पर विस्तृत रूप से समझाया गया जो कि निम्न प्रकार से है :

Broadfunction	A1	A2	A3	A4	A5
Material Development					
Teacher Training					
Research					
Assessment					
Monitoring					

प्लान तैयार करते समय Broadfunction तथा इसके अंतर्गत आने वाली विभिन्न गतिविधियों को किस प्रकार समाहित किया जाता है साथ ही ब्रॉड फंक्शन तथा टाइमलाइन के महत्व के बारे में समझाया गया। साथ ही बजट बनाने में विभिन्न Issues पर भी चर्चा की गई जैसे गेस्ट, लिमिट आदि। बजट बनाने के लिए

What I am doing.

Why I am doing.

Scale of Size.

सत्र में Recuring and Non- Recuring Budget पर भी चर्चा हुई। इसके पश्चात डाइट के Recuring तथा non-Recuring मदों पर चर्चा हुई ।

इसके पश्चात Approach of Making Budgeting पर चर्चा हुई ।

बजट मुख्यतः चार प्रकार के बताए गए—

- Static Budget
- Incremental Budget
- Zero based Budget
- Flexible Budget

A static budget is a financial plan set before a specific period, such as a month or a year, using predicted amounts based on historical data and assumptions about the future. The static budget remains unchanged.

An incremental budget is a budget that is prepared by taking the current period's budget or actual performance and using it as a base and then adjusting it by incremental amounts.

Zero-based budgeting is a budgeting technique in which all expenses must be justified for a new period or year starting from zero, versus starting with the previous budget and adjusting it as needed.

A flexible budget is a budget that adjusts for changes in the level of activity or output.

इन चारों प्रकार के बजट पर विस्तृत चर्चा की गई और उदाहरण के द्वारा समूह को समझाया गया। इसके पश्चात ग्रुप फोटो सेशन हुआ तथा टी ब्रेक लिया गया।

द्वितीय सत्र : बजट को कैसा बनाया जाए इस पर चर्चा हुई बजट तैयार करने के लिए उदाहरण द्वारा एक्सेल शीट पर समूह को समझाया गया, बजट तैयार करते समय प्रत्येक आइटम के लिए लाइन आइटम्स लिखना जरूरी है की जो बजट प्रस्ताव किया जा रहा है उसको क्यों किया जा रहा है , क्या किा जाना है आदि। साथ ही सामग्री क्रय करने के लिए विस्तृत जानकारी दी गई जिसमें Product Code, GST GeM आदि हैं। IFMS पोर्टल पर भी समूह में चर्चा की गई। पूरे सत्र प्रतिभागियों के लिए काफी लाभदायक रहा।

द्वितीय सत्र में समूह Prof. Utpal Chattopadhyay के मार्गदर्शन में TISS का भ्रमण किया।



वहां पर टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुंबई के प्रोफेसर सुनील द्वारा सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया गया उसके बाद उनके द्वारा एक बहुत ही उच्च कोटि का प्रस्तुतीकरण दिया गया जिसमें टाटा

इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंस के बारे में बहुत ही विस्तृत जानकारी दी गई साथ ही उनके द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों का विस्तृत प्रस्तुति करण दिया गया , उसमें बताया गया कि उनके संस्थान द्वारा बहुत ही बहुत सारे ग्रेजुएट



और पोस्ट ग्रेजुएट कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। सभी प्रतिभागियों को इनका सामाजिक क्षेत्र में किया जा रहा कार्य बहुत ही पसंद आया उनके द्वारा बताया गया सामाजिक क्षेत्र में जो विभिन्न कार्यक्रम इस संस्थान द्वारा चलाए जाते हैं उनमें फील्ड वर्क बहुत ज्यादा संचालित होता है जिसमें छात्र अपने को वास्तविक जीवन से जुड़ा हुआ पता है और जीवन में बहुत कुछ उसको सीखने को मिलता है। वास्तव में वह छात्र अपने को उसे कम्युनिटी का ही एक सदस्य मानते हुए उससे सम्बन्धित समस्या पर कार्य करते हैं। उनके द्वारा बताया गया की Community के साथ 15 दिन तक रहने के बाद एक प्रोजेक्ट तैयार करता है और संस्थान में आकर इसका प्रस्तुतिकरण करता है । इसका आकलन किया जाता है । इस प्रकार की बहुत सारे कार्यक्रमों का प्रोफेसर सुनील जी द्वारा हमें विस्तृत जानकारी दी गई। इसमें प्रतिभागियों द्वारा भी विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तर किए गए जिनका

प्रोफेसर सुनील जी द्वारा विध्वत समाधान बताया गया। उसके बाद प्रतिभागियों द्वारा टाटा इंस्टीट्यूट और सोशल साइंस के द्वारा चलाए जा रहे हैं Center Of Excellence in Teacher Education (CETE) के बारे में विस्तृत जानकारी लेने की इच्छा जाहिर की गई प्रोफेसर सुनील द्वारा तुरंत ही संबंधित विभाग को सूचना दी गई और हम Center Of Excellence in Teacher Education पहुंचे जहां पर प्रो. रुचि कुमार द्वारा सेंटर आफ एक्सीलेंस फॉर टीचर एजुकेशन में किये जा रहे विभिन्न कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी हमें दी गई। उनके द्वारा बताया गया कि हम लोग मुख्यतः Action Research, MA in Education(elementary), MA in Education and Technology and PhD Education आदि के बारे में बहुत विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही विभिन्न ऐसी छोटे कार्यक्रमों की जानकारी दी गई जिनको आप ऑनलाइन के माध्यम से संपन्न कर सकते हैं कुछ ऐसे कार्यक्रमों का भी जिक्र किया गया जिनका सर्विस में होते हुए हम सब लोग हाइब्रिड मोड में संपन्न कर सकते हैं। उनके द्वारा बताया गया की टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंस का SCERT Delhi , DIET UP और मध्य प्रदेश शिक्षा विभागी के साथ कुछ कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों पर एक स्टडी भी उनके द्वारा संपादित की गई जिनके द्वारा संस्थानों में सुधार हेतु कुछ बिंदुओं को उल्लेखित किया गया है। जो उनके द्वारा बताया गया कि हमारे द्वारा किये जा रहे सभी कार्यक्रम हमारी वेबसाइट tissx.tiss.edu पर उपलब्ध है।



उसके बाद प्रोफेसर उत्पल चट्टोपाध्याय के साथ गेटवे ऑफ इंडिया, होटल ताज का भ्रमण किया गया सभी सदस्यों ने गेट ऑफ इंडिया और होटल ताज की इतिहास के बारे में जाना आपस में चर्चा परिचर्चा की, फोटोग्राफी की और फिर वहां से मरीन ड्राइव पहुंचे। यहां पर रात का दृश्य भी सभी प्रतिभागियों को बहुत सुंदर लगा सभी लोगों ने खुश होकर विभिन्न स्तरों की फोटोग्राफी संपन्न की और उसके बाद माया नगरी के विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए

रात्रि का बहुत ही आकर्षक और सुंदर दृश्य देखते हुए प्रतिभागी IIM Mumbai Institute में पहुंचे।

चतुर्थ दिवस 11 जनवरी, 2024 :

Leading and Managing Change

Prof. Sumi Jha

The session began with sharing of a research study on competencies of Head Masters/ Principals of Karnataka School education:

- Collected competency data of 22000 Head Masters/ Principals
- Method used was questionnaire
- The competency variables were -
 1. Self-management
 2. Self-awareness
 3. Managing School resources and system

Research Study ...

1. Managing school programs and projects
2. Managing curriculum and instruction
3. Managing school financial resources
4. Managing communication
5. Developing influence
6. Building collaboration
7. Promoting learning culture
8. Data driven instructions
9. Coaching and feedback



- Proficiency in each competency was categorized in four levels
- From novice to proficient
- And training was recommended accordingly i. e. beginner and advanced level

Understanding Change

- The following points were discussed
 - Business of organization and
 - Transition in last one year
 - Past and recent initiatives

Who we are ?

- What our organization does was discussed in the light of change
- Prof Jha suggested that we should be open for change
- Can some old programmed be eliminated and new be initiated
- Teams can be made and responsibility be given
- She illustrated benefits and concepts of leading and managing change through NISSAN motors' case study
- It was discussed how Carlos Ghosn turned NISSAN into a profit making company
- Carlos used the technique - sense of urgency
- 3-3-3 program
 1. 3 Partners – Supplier, Purchasing and Engineering
 2. 3 Years
 3. 3 regions

SWOT Analysis

- SWOT tool was discussed, followed by SWOT analysis exercise of each DIET and also of SCERT
- All the DIETs and SCERT presented their SWOT analysis

- Then SWOT analysis of self was discussed
- Prof Jha mentioned that opportunities were present, but we were not leveraging them
- She suggested that taking certain initiatives we could become threat to private schools

Start...Stop...Continue

- To bring change Prof. Jha explained -
 - Start...Stop...Continue
- Think what new you should do - start that
- The activity or habit causing me problem- stop it
- Continue the habit which is good
- Align all these with SWOT analysis

Resistance to Change

- Concept of 'Resistance to change' was elaborated on by showing a video clip – 'Who Moved My Cheese'
- On the basis of this clip Prof. Jha conversed about three types of people
 - One those they smell changes that are to occur in future and so change in advance accordingly – Sniff and Scurry
 - Two those they change when changes occur - Haw
 - Three those they never change - Hem

Stages of Change

- Prof. Sumi Jha shared insights on stages of change

- Change consists of three stages
- To change one needs to pass all these three stages

1-Unfreezing

- To come out of tight structure, unlearning

2-Moving

- Continuously practice the new habit by letting go of the old one

3-Refreezing

- To adapt the new habit when it becomes permanent
- She emphasized that we should become agent of change

Resistance to Change

- Prof Jha debated the causes
 - ❑ Fear of unknown, loss, failure
 - ❑ Cultural assumptions and values etc

Situational Leadership Style (Hersey and Blanchard)

- An exercise was conducted where 12 situations were given
- On the basis of these situations flexibility and effectiveness tables were to be filled
- This tool is used to calculate the effectiveness of the leader

Two types of leadership-

1. Task behavior
2. Relationship behavior

Situational Leadership Style (Hersey and Blanchard)...

- Four situations were explained
 - S1 Telling – Immature employees-screws be tightened
 - S2 Selling – A little bit mature employees –
 - S3 Participating – Able but not willing –
 - S4 Delegating – Able and willing – Flexibility be given
- By forming strong group change could be brought
- A highly productive and interactive session concluded

Session II: Managing Teams

By Prof. Upasana A Agarwal

- Team helps in attaining academic goals
- 85% depends on team performance
- Video (Motor bike riders) was shown to discuss importance of team
- Group, working to achieve a common goal is called a team

Elements of Teamwork

- To emphasize the importance of teamwork two activities were conducted
 1. Uses of chalk – individual
 2. Uses of petal – Group
- Through these two activities it was proved that teamwork is more productive

HOW TALL CAN YOU BUILD YOUR TOWER

- The most joyful activity building tower began
- Participants were made to do a tower building exercise in group
- Followed by a very useful discussion to make participants understand the team dynamics, goals and roles
- The evaluation was done on three parameters -**Time, creativity and aesthetics**

HOW TALL CAN YOU BUILD YOUR TOWER...



- The team performances were discussed on the basis of some sets of questions, like –
 - What kind of behavior helped/hindered the Group
 - Similarly on decision making, roles, motivation, creativity, executioners etc
 - This particular activity turned out to be the most joyful one and each participant was enjoying it to the fullest

Hierarchy of Factors Affecting Team Effectiveness

- Prof. Upasana deliberated on the following factors affecting the success of a team in its project in great detail by relating things to the tower building activity.
 - Interdependent task
 - Goals
 - Roles
 - Procedures and
 - Interpersonal relationships
- The engaging and interactive session ended with an activity where participants wrote the characteristics of the behavior of the fellow participants on a papers stuck on the backs of them.

पंचम दिवस 12 जनवरी, 2024 :

Communication, Engagement and Empowerment Prof. Nikhil K. Mehta

संदर्भदाता प्रोफेसर निखिल के. मेहता ने स्वयं का परिचय देने के बाद कम्युनिकेशन, इंगेजमेंट और एंपावरमेंट के संदर्भ में प्रतिभागियों के साथ अंतःक्रिया आरंभ की। इसमें सबसे पहले Contracting के संबंध में चर्चा करते हुए इसके लिए महत्वपूर्ण पांच प्रक्रियाएं बताई गईं-

1. अवलोकन (Observation)
2. प्रतिपुष्टि (Feedback)
3. प्रतिबिंबित करना या विचारण (Reflection)
4. गोपनीयता (Confidentiality)
5. समाधान उपलब्ध करना (Provide Solutions)

एक गतिविधि के अन्तर्गत सभी प्रतिभागियों के युगल बनाकर उनसे आपस में एक दूसरे का अवलोकन करने को कहा गया। इसके उपरांत प्रत्येक प्रतिभागी को कक्ष में उपस्थित किसी एक निर्जीव वस्तु का अवलोकन करने के लिए कहा गया। कुछ प्रतिभागियों को अपने अवलोकन प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया गया। इस गतिविधि के माध्यम से Observation एवं Perception के मध्य अंतर स्पष्ट किया गया और यह बताया गया कि हमें सदैव Observation पर निर्भर रहना चाहिए क्योंकि Perception गलत भी हो सकते हैं और दो लोगों के Perception एक ही समय में भिन्न-भिन्न भी हो सकते हैं। Feedback सकारात्मक और रचनात्मक हो सकता है पर इसको पूरी तरह से Observation पर आधारित रहना चाहिए। फीडबैक अवलोकन पर आधारित सूचनाओं के आदान प्रदान या प्रश्नों के रूप में होना चाहिए सुझाव के रूप में नहीं। Reflection भावनाओं या विचारों में परिवर्तन रूप में हो सकता है, लेकिन यह बदलाव सदैव आंतरिक होना चाहिए, क्योंकि बाहर से थोपा हुआ बदलाव स्थाई रूप ग्रहण नहीं करता है। मजबूत संबंध के लिए विश्वास आवश्यक है और विश्वास, गोपनीयता (Confidentiality) अर्थात संवाद की गोपनीयता सुनिश्चित रखने के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।



इसके पश्चात संदर्भ दाता प्रोफेसर मेहता द्वारा समस्त प्रतिभागियों को स्वयं के संप्रेषण कौशल को 1 से 5 के निर्धारण मापनी पर मापने का निर्देश दिया गया। अधिसंख्य प्रतिभागियों ने स्वयं को पांच में से तीन अथवा चार अंक दिए कुछ एक ने अपने संप्रेषण कौशल को और दो के स्तर पर मापा। लेकिन एक और पांच पर किसी ने भी अपने को निश्चित नहीं किया। इस परिणाम का विश्लेषण करते हुए संदर्भदाता ने स्पष्ट किया कि यह एक प्रकार का महत्व मनोवैज्ञानिक खेल है। जिसमें हम स्वयं को सुरक्षित क्षेत्र में रखते हैं। यह एक मानवीय प्रकृति है।

इसी के साथ उन्होंने एक दूसरी गतिविधि भी आयोजित करवाई जिसमें जेल वेल (GW) एंड नॉट जेल वेल (NGW) दो कॉलम्स में प्रतिभागियों को बताने के लिए कहा गया कि आप किन प्रकार के गुणों वाले लोगों के साथ आसानी से घुल मिल जाते हो और किन के साथ घुलना-मिलना कठिन होता है। इसकी पूरक गतिविधि के रूप में प्रतिभागियों से प्रश्न पूछा गया कि आप इनमें से किसके साथ काम करना चाहेंगे? इस सारी बातचीत के समेकन स्वरूप संदर्भदाता ने स्पष्ट किया कि अहं (Ego) किसी न किसी रूप में हम सभी के अंदर होता है।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए संदर्भदाता ने सिगमंड फ्रायड के सिद्धांत पर आधारित PAC की संकल्पना को प्रतिभागियों के सम्मुख प्रस्तुत किया।

P -----→ Parent-----→ Value (मूल्य)
 A -----→ Adult-----→ Thoughts (विचार)
 C -----→ Child-----→ Feelings (भावनायें)

पैरेंट्स दो प्रकार के हो सकते हैं क्रिटिकल पैरेंट (CP) एवं नर्चिंग पैरेंट (NP)। इसी प्रकार चाइल्ड भी दो प्रकार के हो सकते हैं ओबेडिएंट चाइल्ड (OC) या फ्री चाइल्ड (FC/NC/RC/SC)। संदर्भदाता ने स्पष्ट किया कि मनुष्य के अहं (Ego) के 05 चरण हो सकते हैं और इस आधार पर व्यक्तित्व के 12 स्तर हो सकते हैं।

PAC का समुच्चय हमारा स्व या Self है। यह तीन स्तर पर होता है- यह तीन स्तर पर होता है एक वास्तविक अर्थात Real Self, दूसरा जिस प्रकार से हम कार्य करते हैं अर्थात Executive Self और तीसरा जैसा हम होना चाहते हैं आदर्श स्तर अर्थात Ideal Self, तो इस प्रकार यदि किसी व्यक्ति में वास्तविक, क्रियात्मक और आदर्श स्व में उच्च स्तर का समन्वय है तो वह सुखमय जीवन व्यतीत कर रहा है। इसके विपरीत यदि वास्तविक, क्रियात्मक और आदर्श स्व में अंतर है तो हमारे जीवन में भी दुख उतना ही ज्यादा होगा।

संप्रेषण के विभिन्न रूपों यथा Complimentary Transaction, Cross Transaction, Ulterior Transaction और Carrom Transaction को PAC के सन्दर्भ में समझाते हुए सिंबोसिस (Symbiosis) की प्रक्रिया से भी प्रतिभागियों को परिचित करवाया जिसका अर्थ है अपनी समस्याओं के लिए दूसरों से समाधान की उम्मीद रखना। एक अच्छे संप्रेषण के लिए Non Violent Communication की चर्चा की गई जिसमें तमाम Dos & Don'ts पर भी व्यापक चर्चा की गई।

अगले सत्र में नीतिशास्त्र और मूल्यों पर चर्चा के लिए संदर्भदाता ने अमेरिका बैंकर मैक्कॉय की कहानी सुनाई। जो अपने मित्र स्टीफन के साथ लंबी छुट्टियों के लिये हिमालय के एक्सपीडिशन पर था और एवरेस्ट पर चढ़ाई कर रहा था। इस कहानी में एक स्थिति आती है जब एक बीमार और बेहोश साधु को लेकर स्टीफन और मैक्कॉय में मतभेद हो जाता है। मैक्कॉय आगे बढ़ना चाहता है और स्टीफन वहीं पर रुकना चाहता है।

संदर्भदाता ने सभी प्रतिभागियों से पूछा कि वह किसके साथ हैं?

मैक्कॉय अथवा उसके स्टीफन! इसके बाद प्रतिभागियों को दो समूहों में बांट दिया गया और उन्हें पर इस पर चर्चा करने के लिए कहा गया कि अपने उत्तर के पक्ष में उनके पास क्या-क्या तर्क हैं? इसके बाद दोनों समूहों से एक-एक व्यक्ति ने अपने समूह के तर्कों को सदन के सम्मुख रखा और यह प्रयास किया कि दूसरे समूह को आश्चस्त किया जाए कि हमारा मत सही है।

कथा की पृष्ठभूमि और समूहकार्य में प्रतिभागियों के व्यवहार के अवलोकन को आधार बनाते हुए संदर्भदाता महोदय द्वारा नैतिकता, नीतिशास्त्र व मूल्यों पर व्यापक चर्चा की गई। किस तरह से हमारे अंदर नैतिकता, नीतिशास्त्र व मूल्य विकसित होते हैं, उस पर व्यापक विचार-विमर्श का आयोजन किया गया। चर्चा में चैनेलाइजेशन व सामाजिक प्रणाली इत्यादि पर भी मेहता सर ने रोचक टिप्पणियां की। इसको मैनेजमेंट से जोड़ते हुए उन्होंने बताया कि जब भी कोई नया प्रोजेक्ट शुरू किया जाता है तो विभिन्न हितधारक अपने-अपने Ethics & Morality के आधार पर अलग-अलग समूह में बैठे होते हैं। एक सफल प्रोजेक्ट के लिए आवश्यक है कि सभी के विचारों, मूल्यों को एक मंच प्रदान किया जाए ताकि एक राय बनाने में सहायता मिल सके। क्योंकि जब तक पूरी टीम एक राय के साथ एक फैसला नहीं लेती प्रोजेक्ट की सफलता संदिग्ध ही रहेगी।

लोग अपने नैतिक फैसले कैसे लेते हैं? इस पर चर्चा करते हुए Ethics & Morality के अंतर को स्पष्ट करते हुये Morality के विविध रूपों यथा Moral imagination, Moral Muteness, Moral Character, Moral Motivation की चर्चा की गई। परस्पर विरोधी विचारों में समन्वय कैसे स्थापित किया जाए और किस प्रकार लोगों को एक मध्य मार्ग अपनाने में सहायता मिल सकती है, इसके लिए संदर्भदाता ने Assertiveness / Cooperation ग्राफ के माध्यम से चार प्रमुख प्रकार के व्यवहारों उनके मूल्यों एवं विशेषताओं के बारे में बताया-

High Assertiveness/Low Cooperation - LION-Competition - I right You wrong

Low Assertiveness/Low Cooperation TORTOISE - Avoidance I wrong You wrong

Low Assertiveness/High Cooperation - CHAMELION - accommodation - I wrong You right

High Assertiveness / High Cooperation-HONEY BEE - Collaborate - I right You right

संदर्भदाता ने बताया कि इन चारों को जोड़ने का, चारों को एक मंच पर लाने का जो मार्ग है वह Cooperation या सहयोग है। जहां पर हम अब दूसरों के साथ एक सहमति बनाने का प्रयास करते हैं। इस स्थिति को COW अर्थात गाय के रूप में इंगित किया गया। बड़ी टीम में अलग-अलग एथिक्स और मूल्यों से जुड़े हुए लोगों को इसी प्रकार बीच के मार्ग खोजने की आवश्यकता होती है।

कुल तीन सत्रों तक चली रोचक अंतः क्रिया ने प्रतिभागियों को अत्यंत प्रभावित किया और प्रतिभागियों ने महसूस किया कि इस प्रकार के सत्रों को अधिक समय प्रदान किए जाने की आवश्यकता है। संदर्भदाता प्रोफेसर मेहता ने इस विषय पर अग्रिम अध्ययन के लिए निम्न संसाधनों का गहन अध्ययन का विकल्प भी प्रतिभागियों के सम्मुख रखा और उनके स्रोतों की जानकारी भी साझा की-

1. Transactional Analysis Theory: The Basics. Carol Solomon
2. Zen and the art of Motorcycle Maintenance. Robert M. Pirsig
3. If you meet buddha on the road, Kill him. Sheldon B. Copp

अपने तीन सत्रों के अंत में प्रोफेसर मेहता ने विशिष्ट बच्चों के लिए किये जा रहे आई.आई.एम. मुंबई के प्रयास परिवर्तन के संदर्भ में बताया।

आज के दिन और पूरे कार्यक्रम के अंतिम सत्र में प्रोफेसर वी. के. खानापूरी और प्रोफेसर उत्पल चट्टोपाध्याय प्रतिभागियों को पुनः दिवस:-1 में ले गए, जहां प्रतिभागियों ने DIET के संदर्भ में समूहवार विजन स्टेटमेंट का निर्माण किया था। दोनों संदर्भदाताओं ने सभी 6 समूहों द्वारा बनाए गए विजन स्टेटमेंट्स का विश्लेषण किया और इस दौरान प्रतिभागियों को प्रेरित किया कि वह सभी समूहों द्वारा प्रयुक्त किए गए महत्वपूर्ण और विशिष्ट शब्दों को सूचीबद्ध करें इस विश्लेषण के अंत में दोनों संदर्भदाताओं ने बताया कि हितधारकों को स्वयं ही अपने विजन स्टेटमेंट का निर्माण करना होगा, परंतु इस गतिविधि के माध्यम से यह समझने में सहायता मिली कि हमें किन लक्ष्यों, उद्देश्यों, कार्यों और परिणामों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। यह एक शुरुआत है। SCERT और DIETs संयुक्त रूप से मिलकर इस पर और अधिक गंभीरता से मंथन कर सकते हैं और एक अंतिम लेकिन प्रभावी विजन स्टेटमेंट और मिशन स्टेटमेंट्स का निर्माण करने के लिए आगे बढ़ सकते हैं

इसके पश्चात सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं कार्यशाला के समूह फोटोग्राफ प्रदान किए गए। निदेशक अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण उत्तराखंड द्वारा आईआईएम मुंबई और इस कार्यक्रम के समन्वयकों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया और विश्वास जताया कि यह संबंध आगे भी जारी रहेगा। विभिन्न विषयों और क्षेत्रों पर आईआईएम मुंबई के साथ ART & SCERT उत्तराखंड को सहयोग और समन्वय के अवसर मिलते रहेंगे।

